हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट न. एवं दिनाक (Test No. & Date): 1, 16/7/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 116 1/2

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। कुछ उत्तर कमजोर हैं, इन्हें और बेहतर बनाने का प्रयास करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) पहाड़ी हिंदी

हिन्दी भाषा का विकास विभिन्न चरणों से होता हुआ अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुँचा है। हिन्दी के वर्तमान स्वरूप को निर्धारित करने में अनेक भाषाओं की संक्रमण अवस्था से गुजरना पड़ा है। पहाड़ी हिंदी इस अर्थ में हिन्दी को और समृद्ध करती है।

पहाड़ी हिंदी का स्वरूप और संरचना वर्तमान हिन्दी के स्वरूपगत और संरचनात्मक विकास की प्रक्रिया से कई स्तरों पर प्रभावित है। पहाड़ी हिन्दी का स्रोत उत्तर भारत के उत्तराखण्ड और कुछ हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्यों में पाया जाता है।

गढ़वाली गड़वाली तथा कुमाऊँनी पहाड़ी हिंदी के दो प्रमुख रूप हैं। एक ओर जहाँ गड़वाली हिन्दी, उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर को अभिव्यक्ति प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर कुमाऊँनी कुमाऊँ क्षेत्र की भाषा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पहाड़ी हिन्दी की ध्वनिगत विशेषता में एक ओर जहाँ ढ ड़ ध्वनि की प्रधानता पायी जाती है वहीं प्रमुख और इसमें मधुर ध्वनियों का भी योगदान है।

व्याकरणीय और शब्दकोशीय विशेषता के स्तर पर पहाड़ी हिन्दी आधुनिक खड़ी बोली के करीब है। यहाँ शब्दकोश में स्थानीय शब्दों का प्रयोग अधिक होता है जो वहाँ की स्थानीय संस्कृति की अभिव्यक्ति होते हैं।

इस प्रकार पहाड़ी हिन्दी न केवल व्याकरण, ध्वनि, शब्दकोश के स्तर पर खड़ी बोली को समृद्ध करती है बल्कि मनोहर श्याम जोशी, इलाचन्द जोशी, आदि साहित्यकारों के यहाँ पहाड़ी हिन्दी का खुला प्रयोग हुआ है।

खूब

इस प्रकार भाषा और साहित्य दोनों स्तरों पर पहाड़ी हिन्दी अत्यन्त ही समृद्ध भाषा है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

आधुनिक खड़ी बोली का प्रारम्भ यद्यपि 19वीं सदी में माना जाता है परन्तु इसका शुरुआती प्रयोग अमीर खुसरो और रहीम के काव्य में भी दिखाई देता है।

रहीम के काव्य में खड़ी बोली का प्रारम्भिक स्वरूप दिखाई पड़ता तो है लेकिन यह समय के हिसाब से भले प्रारम्भिक है परन्तु प्रयोग और विशेषता के स्तर पर यह आधुनिक खड़ी बोली के काफी नजदीक है।

"रहिम पानी राखिए बिन पानी सब सून"

"रहीम निज मन की व्यथा"

उपरोक्त पंक्तियों में रहीम के प्रयोग से खड़ी बोली की भावागत विशेषताओं का पता चलता है। कारक और परसर्गों का प्रयोग इसी रूप में मिलता है जैसा आधुनिक खड़ी बोली हिन्दी में।

इस प्रकार रहीम कवि ने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नीतिपरक दोहे से न केवल नैतिक विचारों और सदाचार को बढ़ाते हैं बल्कि भाषा के स्वरूप को भी निखारते और सँवारते हैं। हिंदी खड़ी बोली के विकास में कबीर और रहीम का अप्रतीम योगदान है।

अप्रतिम

Good 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

मध्यकाल में अवधी को साहित्यिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई इसमें जायसी और तुलसी एक दूसरे के पूरक बनकर उभरे। एक तरफ तुलसीदास ने अवधी को मर्यादा और संस्कार से जोड़ा तो जायसी ने अवधी को रसात्मकता, शृंगार और प्रेम की चासनी में डूबा दिया।

अवधी का अत्यन्त ही सृजनात्मक स्वरूप जायसी के काव्य में दिखाई पड़ता है। 'पद्मावत' इस अर्थ में इनकी अमर कृति है। अवधी भाषा में प्रेम और शृंगार का जो धारा जायसी ने बहाई वह पूरे मध्यकाल में अवधी को निखारती है 'बारहमासा वर्णन', शुक-शुकनी संवाद आदि शैलियों का प्रयोग जायसी ने अपनी श्रेष्ठ शैली में किया।

अवधी भाषा में कोमलता और संस्कारों को एक भिन्न नार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायसी ने प्रदान किया। जायसी का सम्पूर्ण काव्य अवधी को समर्पित था। जायसी ने "बौरै राधा झकोरि झकोरि" और "पिय से कहौ संदेसड़ा" इत्यादि रूपों में अवधी की रचनात्मकता, छन्द वैशिष्ट्य और अलंकारों की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

और गहराई लाएँ।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अपभ्रंश के भेद

बोली

प्राचीन वैदिक कालीन संस्कृत से खड़ी बोली हिन्दी तक की विकास यात्रा में अपभ्रंश का योगदान सर्वोच्चतम है। अपभ्रंश भाषा भारतीय आर्यभाषा विकास की मध्यावस्था से संबन्धित है। यह एक संक्रमण कालीन भाषा होने के साथ आधुनिक आर्यों की भाषा की जननी भी है। यह जननी इस अर्थ में है कि भाषा विकास की मध्यकालीन अवस्था में यह सबसे आखिरी अवस्था है और यही लगभग समस्त आधुनिक आर्य भाषाओं का जन्म हुआ।

अपभ्रंश के निम्न भेद हैं

(i) मागधी अपभ्रंश
(ii) अर्द्ध मागधी अपभ्रंश
(iii) पैशाची अपभ्रंश
(iv) महाराष्ट्री अपभ्रंश
(v) शौरसेनी अपभ्रंश
(vi) पहाड़ी अपभ्रंश

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार विभिन्न अपभ्रंश रूपों से ही आधुनिक आर्यभाषाओं की उत्पत्ति होती है। पूर्वी अपभ्रंश तथा पाश्चात्य अपभ्रंश के रूप में भी अपभ्रंश का वर्गीकरण किया जाता है।

और गहराई लाएं

5/10

मॉडल उत्तर देखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिन्दी भाषा क्षेत्र का अर्थ उस भौगोलिक क्षेत्र या विस्तार से है जहाँ तक हिन्दी का प्रयोग किया जाता है, जहाँ तक हिन्दी भाषा बोली और समझी जा सकती है वे क्षेत्र हिन्दी भाषी कहे जाते हैं।

उत्तर भारत के दिल्ली, उत्तराखण्ड, उ०प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार झारखण्ड और छत्तीसगढ़ का कुछ क्षेत्र इसके अन्तर्गत हैं।

हिन्दी भाषा क्षेत्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा क्षेत्र में अनेक बोलियों का क्षेत्र सम्मिलित है जैसे खड़ी बोली क्षेत्र - पश्चिमी उत्तर प्रदेश. ब्रजभाषा क्षेत्र, अवधी बोली क्षेत्र, पहाड़ी हिन्दी क्षेत्र, भोजपुरी क्षेत्र, इत्यादि

हिन्दी भाषा क्षेत्र में सर्वत्र खड़ी बोली हिन्दी ही नहीं बोली जाती है अलग- अलग क्षेत्रों की बोलियों का प्रयोग होता है परन्तु, सामान्य रूप से साहित्य और संवाद के रूप में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

5/10

Good

विदेशी क्षेत्र भी बताएँ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में अवधी और ब्रजभाषा, काव्य भाषा के रूप में प्रतिस्पर्धा करती दिखाई देती है। अवधी को जहाँ तुलसी ने मर्यादा प्रदान की वहीं जायसी ने इसे प्रेम माधुर्य प्रदान किया लेकिन ब्रजभाषा सूरदास के प्रभाव में काव्यभाषा के रूप में नये क्षितिज पर पहुँच गई और रीतिकाल में ब्रजभाषा अपनी चपलता, चंचलता और निपुणता के कारण साहित्यिक पटल पर छा गई।

काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा का विकास सबसे प्रथम और परिपक्व रूप में सूरदास ने किया। 'सूरसागर' ब्रजभाषा की 'इनसाइक्लोपीडिया' कही जा सकती है। ब्रजभाषा की समस्त संभावनाओं की तलाश मानो सूरदास ने अपने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'सूरसागर' में कर डाली हो।
शृंगार वर्णन में सूरदास का कोई सानी नहीं था और ब्रजभाषा इस कवि को पाकर धन्य हो गई। ब्रजभाषा की अपार संभावनाओं का द्वार सूरदास ने ही खोला था बाद में अन्य कवि इससे चासनी लेते रहे।
'भ्रमरगीत' ब्रजभाषा में लाक्षणिकता और वक्रता के प्रवेश का मार्ग प्रशस्त करती है।
रीतिकाल ब्रजभाषा के विकास के अनुकूल था क्योंकि रीतिकालीन मानसिकता के पोषण में यह भाषा सहायक थी। रीतिकालीन मानसिकता में शृंगार, अलंकार, नेकी और तात्कालिकता की मांग थी जो ब्रजभाषा से अधिक कहीं और प्राप्त नहीं हो सकती थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इलाहीर केशव, बिहारी,
पद्माकर, घनानन्द जैसे
कवियों के पदों में भी
ब्रजभाषा का सधा और
चातुर्यपूर्ण प्रयोग मिलता
है मीराबाई तथा रसखान
ने भी ब्रज भाषा को
समृद्ध किया।

आधुनिक काल में, गद्य
के विस्फोट के आगे ब्रजभाषा
अधिक देर तक टिक न सकी।
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे लेखक भी
गद्य को खड़ी बोली में तो
कविता ब्रज भाषा में करते थे
परन्तु आधुनिक भावबोध व
विचारधारा का वहन करने में
सक्षम होने पर इसका स्थान खड़ी
बोली हिन्दी ने ले लिया।

परन्तु फिर भी ब्रजभाषा का
मध्यकाल में विशेष प्रभाव रहा। खासकर
उत्तर मध्यकाल में जब भक्ति कालों
पड़ रही थी

Good 12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

हिन्दी साहित्य में विद्यापति को संधिकाल का कवि कहा जाता है। विद्यापति एक तरफ दो कालखण्डों को जोड़ने का कार्य करते हैं तो दो काव्यधारों (काव्यधाराओं) को भी जोड़ते हैं। विद्यापति हिन्दी साहित्य को मैथिली की मिठास से सराबोर करने वाले कवि हैं।

विद्यापति की सौन्दर्य चेतना का विकास मैथिली, और संस्कृत दोनों से संयुक्त होता है और जिसकी सुन्दर अभिव्यक्ति हिन्दी साहित्य में होती है।

विद्यापति की सौन्दर्य चेतना में नारी-चित्रण का स्थान अनूठा है। विद्यापति के शृंगार प्रधान रचनाओं को जॉर्ज ग्रियर्सन जैसे लोगों ने आध्यात्मिकता की कोटि में ~~स्थान~~ रखा है जबकि शुक्ल जी और द्विवेदी जी जैसे इतिहासकार और आलोचक इसे शृंगारपरक रचना मानते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महत्त्वपूर्ण

नारी सौन्दर्य के साथ विद्यापति की सौन्दर्य चेतना का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनकी ग्रामीण समाज और पर्यावरणीय सौन्दर्य चेतना का भी है। ग्रामीण समाज और परिवेश का बहुत सजीव वर्णन विद्यापति द्वारा किया गया।

इस प्रकार विद्यापति हिन्दी साहित्य को अपनी सौन्दर्य चेतना से समृद्ध करते हैं आगे चलकर विद्यापति का प्रभाव सूरदास आदि पर दिखाई पड़ता है।

और पढ़ें

5/10

मॉडल उत्तर भी देख लें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

अज्ञेय ने हिन्दी कहानियों को संवेदना और शिल्प दोनों स्तरोंपर एक साथ नये प्रयोग करके सँवारा है। नई कहानी आन्दोलन के सदस्यों में इनका नाम भी लिया जाता है।

शिल्प के स्तर पर अज्ञेय ने नई कहानी आन्दोलन में भाषा के स्तर पर एक नई ऊँचाई प्रदान की। भाषा की सर्जनात्मकता का उपयोग इनकी कहानियों का वैशिष्ट्य है। आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने इनकी गद्य और पद्य भाषा का बहुत नवीन किया है और भाषा की सृजनात्मकता का अज्ञेय के ओर को उद्घाटित किया है।

अज्ञेय की कहानियों की भाषा अत्यन्त परिष्कृत है। इनमें प्रयोग होने वाले मुहावरे देशी हैं। इनकी भाषा और मुहावरे आधुनिक समाज के द्वन्द्व से जन्म लेते हैं। पाश्चात्य मुहावरों का प्रभाव भी दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

फ्लैश बैक

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इनकी कहानियों में
चेतना-प्रवाह, फ्लैशबैक और
पूर्वावलोकन शैली का उपयोग हुआ
है। इनकी अधिकांश कहानियाँ
इनके अस्तित्ववादी दर्शन को व्यक्त
करती हैं। अतः इन्होंने कहीं
प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक और लयात्मक
भाषा का प्रयोग किया है।

अच्छा

6/16

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा

इप्टा नामक संस्था प्रगतिशील रंगमंच को बढ़ाने के लिए आगे आयी है। यह संस्था या संघ नाटकों और आन्दोलन के क्षेत्र में हिंदी रंगमंच के विकास में अत्यन्त ही महान योगदान दिया।

अभिनय

इप्टा की स्थापना का उद्देश्य ही यही था कि जिन लोगों को समाज के प्रगतिशील तत्वों को आगे बढ़ाने की रुचि रखने के लिए एक मंच प्रदान किया जाए।

इप्टा अपनी स्थापना के समय से ही सामाजिक और राजनीतिक विषयक नाटकों के मंचन के लिए एक प्लेटफार्म उपलब्ध कराता है। इसके माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक यथार्थवादी नाटकों का मंचन किया जाता है।

इस प्रकार इप्टा वर्तमान में भी अपने सामाजिक और प्रगतिशील सरोकारों के कारण हिंदी रंगमंच

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

को दिशा दे रहा है

गहराई लाएँ

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

नई कहानी आन्दोलन के साथ ही अकहानी आन्दोलन की शुरुआत होती है। यह अकहानी आन्दोलन नई कहानी के नकार और अस्वीकार का आन्दोलन था। इसमें कहानी के सभी धारणात्मक और आधुनिक तत्वों के अस्वीकार और तिरस्कार का स्वर है। इसकी निम्न विशेषताएँ हैं —

1) अकहानी में उद्देश्य को एकदम छोड़ दिया गया। प्रेमचन्द काल में जहाँ कहानी उद्देश्य लेकर चलती थी नई कहानी में मध्यवर्गीय अलगाव, संबन्धहीनता उद्देश्य के स्तर पर थी वहीं अकहानी इसका नकार थी।

2) कहानी में कथानक का ह्रास हो जाना। नई कहानी में कथानक टूटा था यहाँ आकार समाप्त हो जाता है।

3) भाषा के प्रति इनका कोई विशेष आग्रह नहीं दिखता है। भाषा में भी एक अस्वीकार का भाव है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) चरित्र और वातावरण को अधिक महत्त्व नहीं दिया गया है।

इसप्रकार अकहानी, कहानी नहीं होने का आन्दोलन था बल्कि इसने भी कहानी को एक नया आयाम दिया। यह फ्रांस के "Anti Storie Movement" से प्रभावित था।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) नाटककार रामकुमार वर्मा

रामकुमार वर्मा का स्थान हिंदी नाटक विधा में बड़े सम्मान से किया जाता है। इनके द्वारा रचित नाटकों में प्रसादोत्तर और स्वतंत्रोत्तर नाटकों की एक विशिष्ट विशेषता दिखाई पड़ती है। मोहन राकेश और लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों का अगला पड़ाव मानों रामकुमार वर्मा का ही है।

रामकुमार के नाटकों में रंगमंचीय विधान का विशेष स्थान होता है। वर्मा के रंगमंचीय चेतना अपने युग की चेतना का अतिक्रमण करती प्रतीत नहीं होती है। मोहन राकेश से प्रभावित नजर आती है।

रामकुमार वर्मा के नाटकों की संवाद योजना विशिष्ट है। वाक्य छोटे और बँधे हुए होते हैं। नाटकीयता और आकस्मिकता को लेकर विशेष आग्रह नहीं दिखाई पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार रामकुमार वर्मा हिन्दी नाटक और रंगमंच परम्परा को एक अलग स्थान प्रदान करते हैं।

3/10

गहराई और प्रमुख नाटकों का नामोल्लेख भी करें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूफी दर्शन, इस्लाम के प्रभाव में विकसित हुआ तथा कुछ अर्थों में इस्लाम से अलग भी हुआ। सूफी दर्शन का मानना है कि ईश्वर और पैगम्बर को करुणा और दया द्वारा जीता जा सकता है। यह मानवतावादी शैली को मानने वाला दर्शन है। इसकी निम्न विशेषताएँ हैं।

1) सूफी मानते हैं कि "इश्क मिजाजी" से "इश्क हकीकी" तक की यात्रा की जा सकती है।

2) इस दर्शन में गुरु के महत्व को पहचाना गया है। "गुरु सुआ जेहिं पंथ दिखावा" जायसी ने यहाँ भी गुरु के बिना पंथ नहीं दिखता है।

3) प्रेम, करुणा और दया का अत्यन्त महत्व है।

4) अल्लाह को प्रेमिका के रूप में दिखाया गया है।

5) इस दर्शन में गीत और संगीत का भी विशेष स्थान है। जनके

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस्लाम में इन सबका नकार मिलता है। जायसी को प्रेम का कवि कहा जाता है। यह भी माना जाता है कि जायसी पर सूफी दर्शन और परम्परा का विशेष प्रभाव रहा है। 'पद्मावत' में राजा रतनसेन द्वारा बार-बार बेहोश होने वाले प्रसंग को सूफीयों की 'हाल की अवस्था" से जोड़कर देखा जा सकता है। सूफी दर्शन में हाल की अवस्था, वह स्थिति होती है जिसमें अल्लाह के बन्दे को कोई सुध-बुध नहीं रहती है।

सूफी दर्शन में एकेश्वरवाद का प्रभाव है। यह प्रभाव हम जायसी पर देखते हैं और निर्गुण काव्यधारा के कबीर जैसे कवियों पर भी। सूफी दर्शन की उत्पत्ति इस्लाम से होने के कारण ही इसमें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एकेश्वरवाद का प्रभाव अधिक है परन्तु इस्लाम जहां प्रकृति में ईश्वर या अल्लाह की अभिव्यक्ति को नकारता है वहीं सूफी दर्शन इसे स्वीकारता है। सूफियों के अनुसार अल्लाह की अभिव्यक्ति प्रकृति में हर जगह है। सूफियों

सूफी दर्शन अल्लाह को प्रेमिका के रूप में भी मानता है और इसी रूप में उनके दिदार को तड़पता है। इस्लाम इसका विरोधी है जायसी के काव्य में पद्मावती सन्दर्भ विशेष में अपने सौन्दर्य से यही अभिव्यक्ति होती है। दीदार

सूफी दर्शन में उपरोक्त कारणों से प्रेम का बहुत महत्व है और इसी कारण से जायसी को "प्रेम के पीर" के रूप में जाता है। पद्मावत के रूप में जायसी ने हिन्दी साहित्य को प्रमुख प्रेमाख्यान दिया है।

इस प्रकार सूफी दर्शन प्रेम, एकेश्वरवाद, गुरु महत्ता, हाल की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवस्था, इश्क इश्की और मिजाजी के रूप में अनेक विशेषताएँ लगे हुए हैं।

अच्छी है

10½/20

मॉडल उत्तर भी देख लें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

हिन्दी कहानी लेखन में कृष्णा सोबती नारीवादी लेखन की सशक्त हस्ताक्षर हैं। इन्होंने हिन्दी कहानी परम्परा को कई स्तरों पर समृद्ध किया। संवेदना और शिल्प दोनों स्तरों पर इन्होंने हिन्दी कहानी लेखन और हिन्दी कहानी को प्रभावित किया।

यह बात निःसंदेह मानी जा सकती है कि जो कार्य "The Second Sex" में सिमोन ने किया पाश्चात्य जगत में वही कार्य कृष्णा सोबती ने 'मित्रो मरजानी' से हिन्दी साहित्य में किया। हिन्दी साहित्य में यौन नैतिकता से जकड़ी नारी को इन्होंने एक झटके में खोल दिया। यौन नैतिकता केवल नारियों के लिए हो, इस पर सवाल किया। न केवल सवाल किया बल्कि इसको तोड़ भी दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती हिन्दी कहानी में एक "बोल्डनेस" की शुरुआत करती है। यह शुरुआत अपने आप में एक परिपक्व शुरुआत थी। उनकी कहानियों में "बोल्डनेस" का महत्व है।

कृष्णा सोबती की कहानियों का तेवर हमेशा एक-सा नहीं है उनकी कुछ कहानियाँ प्रेम और भावनात्मक गहराई की अनुभूति कराती है। "बादलों के घेरे" उनकी ऐसी ही कहानी है। प्रेम, त्याग और समर्पण की कहानी है।

इनकी कहानियाँ संवेदना के स्तर पर केवल भौतिक नहीं है। इनमें सामाजिक-राजनीतिक सरोकार भी है। विभाजन और पलायन पर इनकी कहानियाँ अत्यन्त ही मार्मिक और हृदय को छू लेने वाली है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृष्णा सोबती नई कहानी आंदोलन की कहानीकार हैं। अतः मध्यवर्गी चेतना और शहरी अलगाव और संबन्धहीनता से उत्पन्न अवसाद बिखराव इनकी रचना में भी दिखाई पड़ता है। इस प्रकार नई कहानी आन्दोलन में इनका महत्त्व कम नहीं है।

हिन्दी साहित्य और कहानी में नारीवाद के भोगे हुए यथार्थ पर सबसे सशक्त लेखनी चलाने वाली महिला लेखक भी हैं। इनके नारीवाद का रूप व स्वरूप पश्चिमी नारीवाद नहीं है बल्कि भारतीय परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ नारीवाद है।

शिल्प के स्तर पर इनकी रचनाओं में भाषा के स्तर पर पंजाबी शब्दों का खूब प्रयोग मिलता है। पंजाबी मुहावरों का भी अत्यन्त प्रयोग इनकी कहानी में मिलता है।

9/15 Good

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के महत्त्व के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर ~~प्रसाद~~ प्रसाद को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के 1915-40 के दौर का सूक्ष्म चितेरा माना जाता है। ऐसा इसलिए कि उस दौर के सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक जावेश का उनके नाटकों में अत्यन्त ही सूक्ष्म अंकन हुआ है।

इस अर्थ में प्रसाद का 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक अछूता नहीं है प्रसाद ने इस नाटक से हिन्दी साहित्य की नाटक परम्परा ~~परम्परा~~ में अप्रतिम योगदान दिया माना जाता है।

इस नाटक का शीर्षक ऐतिहासिक है जैसा भी प्रसाद के नाटकों का होता- 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त' इत्यादि। ऐतिहासिक नाटक द्वारा प्रसाद तत्कालीन भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

को सम्बोधित करते हैं। प्रसाद
अपने समय के सांस्कृतिक और
राजनीतिक संकट की तुलना ऐतिहासिक
वातावरण में करते हैं क्योंकि उन
साहित्य के बैन होने का खतरा था।
प्रसाद का 'ध्रुवस्वामिनी'
नाटक इस कारण और भी
महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि इसमें भी
त्याग और बलिदान के लिए
उसी प्रकार पुकार है जिस प्रकार
उस तत्कालीन स्वाधीनता आंदोलन
को। प्रसाद भी एक सांस्कृतिक
जागरण के नायक रहे हैं अतः
उनके ध्रुवस्वामिनी में भी यह
तत्व प्रधानता से उभरा है।
ध्रुवस्वामिनी का महत्त्व
इस बात में भी है कि इसमें
प्रसाद के नारी विषयक सम्पूर्णता
में अवलोकन किया जा सकता
है। प्रसाद की नारी-चेतना, एक ऐसी
नारी पात्र की कल्पना करती है जो
सदैव त्याग, समर्पण और बलिदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के लिए तैयार रहे। इस कारण भी 'ध्रुवस्वामिनी' का महत्त्व अद्वितीय है।

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक प्रसाद के नाटकों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है और हिन्दी साहित्य में भी क्योंकि इस नाटक में प्रसाद की समस्त नाट्य-दृष्टि को देखा जा सकता है।

'ध्रुवस्वामिनी' की संवाद-योजना प्रसाद के अपने वैशिष्ट्य से अलग नहीं है। इसमें लयात्मकता और बिम्बात्मकता का प्रयोग हुआ है। ऐतिहासिक देश काल और पात्रोचित है। रंगमंचीय विधान की यहाँ भी परवाह नहीं है प्रसाद जी को क्योंकि उनका मानना है कि रंगमंच को नाटक के अनुसार विकसित होना चाहिए।

इस प्रकार 'ध्रुवस्वामिनी' हिन्दी नाट्य परम्परा में ही नहीं बल्कि प्रसाद की नाट्य दृष्टि को भी समग्रता में व्यक्त करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

9/15 Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'युवा हिन्दी कहानी' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'युवा हिन्दी कहानी' हिन्दी कहानी की कोई विधा या आन्दोलन नहीं है बल्कि 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में एक विशेष कालम है जिसमें नये कहानीकारों की कहानियों को स्थान दिया जाता है।

'युवा हिन्दी कहानी' एक तरह से नये और युवा कहानीकारों की कहानियों को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाना वाला एक समूहवाचक संज्ञा है।

युवा कहानीकारों में अल्पना मिश्र, संजीव, नीलाक्षीसिंह, अनिल कुमार यादव इत्यादि कहानी... आते हैं।

युवा हिन्दी कहानी की विशेषता इनमें मूल्यों को नकार की वह तीव्रता नहीं है जो अकहानी आन्दोलन में थी। युवा हिन्दी कहानी की विषयवस्तु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अत्यन्त विस्तृत है। इन कहानी में प्रेम सम्बन्धों से लेकर सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक विमर्शों तक की पटरियों को शामिल किया जाता है। इसमें साम्प्रदायिकता भी है तो दूसरी ओर विस्थापन और विभाजन का दर्द भी है। इन कहानियों में वैश्वीकरण और उदारीकरण की चमक तथा पाश्चात्यीकरण का दर्द भी है।

इन कहानियों में भाषा के प्रतीकात्मक रूप की भी प्रधानता होती है। वाक्य विन्यास छोटे तो कहीं अत्यधिक बड़े भी हो जाते हैं। आधुनिक समाज और नये वैज्ञानिक और तकनीकी मुहावरे भी ~~इन कहानियों के~~ युवा हिन्दी कहानी के रंग रूप में रच-बस गये हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार 'युवा हिन्दी कहानी' समकालीन दौर के युवा लेखकों की कहानियों को अभिव्यक्त करने का एक तरीका है जिसमें दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, प्रवासी विमर्श और नारी विमर्श के सामाजिक राजनीतिक सरोकार भी हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चन्द्रगुप्त नाटक की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में 'चन्द्रगुप्त' नाटक उनका प्रतिनिधि नाटक है। यह एक ऐतिहासिक नाटक है तथा चन्द्रगुप्त के राज्याभिषेक की चुनौतियाँ और उनके समाधान को दिखाता है। यह नाटक तत्कालीन भारत की राजनीतिक गुलामी से मुक्त होने की छटपटाहट को भी दिखाता है।

'चन्द्रगुप्त' किस प्रकार से अपने राज्य को प्राप्त करता यह इस ऐतिहासिक वातावरण में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में चल रही विभिन्न विचारों व क्रियाविधियों का अंग्रेजों से मुकाबला भी दिखाता है।

यह असत्य पर सत्य की जीत ही नहीं भारत के सांस्कृतिक गौरव की रक्षा का भी आह्वान करता है। यह नाटक भारत

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत के सांस्कृतिक जागरण को भी सम्बोधित करता है।

विभिन्न कठिनाईयों और घटनाओं को पार करके चन्द्रगुप्त को गद्दी प्राप्त होती है उसी तरह भारतीय सांस्कृतिक जागरण और राजनीतिक संघर्ष को भी सफलता हासिल हो सकती है।

चन्द्रगुप्त नाटक न केवल कथ्य में बल्कि अपने शिल्प में प्रसाद का प्रतिनिधि नाटक है। इसमें प्रसाद की समस्त नाटक ढाँचे की झलकियाँ दिखाई देती है।

8/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) "भक्तिकाव्य सांस्कृतिक संवाद की कविता है जिसके प्रमाण संतकाव्य और सूफीकाव्य भी हैं।" दोनों काव्यधाराओं के प्रमुख कवियों का नामोल्लेख करते हुए उपर्युक्त मत का परीक्षण कीजिए। 15

जॉर्ज ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का 'स्वर्णकाल' कहा। यह संज्ञा आज भी निर्विवाद रूप से भक्ति काल के सन्दर्भ में स्वीकार की जाती है। भक्ति काल स्वर्णकाल बनाने वाली सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है इसके सांस्कृतिक संवाद की क्षमता। हिन्दी साहित्य में ऐसा सांस्कृतिक संवाद शायद ही कभी दिखाई पड़ता है। भक्ति काल की संतकाव्य धारा और सूफी काव्य धारा ने इस सांस्कृतिक संवाद को सबसे अधिक मजबूती से आगे बढ़ाया।

भारतीय इतिहास की यह अनोखी विशेषता रही है कि यहाँ "मध्यमार्ग" या सामासिक संस्कृति को बढ़ाने वाले सदैव बने रहे हैं। अशोक, बुद्ध, अकबर और गांधी इनके उदाहरण हो सकते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हिन्दी साहित्य में वही कार्य जायसी ने किया / सांस्कृतिक संवाद का ऐसा स्वर हमें फिर कहीं और दिखाई नहीं देता है।

जायसी 'पद्मावत' में इस संवाद को आगे बढ़ाते हैं जायसी इस्लाम धर्म को मानने वाले कवि थे परन्तु इन्होंने 'पद्मावती' की हिन्दू कहानी को अपने प्रेमाख्यान का आधार बनाया और सांस्कृतिक संवाद को आगे बढ़ाया।

संतकाव्यधारा के सबसे महत्त्वपूर्ण कवि कबीरदास ने भी मध्यकाल में सांस्कृतिक संवाद की इस लौ को बुझने नहीं दिया। कबीर की सम्पूर्ण रचना और इनका व्यक्तित्व सदैव इस संवाद की पुष्टि करता है।

कबीर ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों के बाह्य आडम्बरों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और कुरीतियों पर चोट किया इस प्रकार "लुगाठी" हाथ लेकर कबीर सांस्कृतिक संवाद की धारा को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानिकलाल के सन्तकाव्य धारा और सूफीकाव्य धारा के कवि न केवल अपने रचना से बल्कि व्यक्तित्व से भी सांस्कृतिक संवाद की वह मिसाल लिखी जो दूसरा ~~हिन्दी साहित्य~~ में नहीं दिखी।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation